International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विलक्षण प्रतिभा के धनी गीतकार, संगीतकार, गायक रवींद्र जैन का संगीत में योगदान

Dr. Gaurav Jain

Assistant Professor, Music Vocal, Rajasthan Sangeet Sansthan, Jaipur

शोध सार

हुनरमंद तो बहुत लोग होते हैं किंतु विश्व में कुछ प्रतिभाएं ऐसी होती हैं जिनकी कला को देखकर यह महसूस होता है ,मानो उन पर माँ सरस्वती का विशेष आशीर्वाद रहा है। ऐसे ही एक अद्वितीय और असाधारण कलाकार रहे - गीतकार ,संगीतकार व गायक रवींद्र जैन। इन्होंने दृष्टिबाधित होने के बाद भी अपनी कल्पनाशील रचनाओं से पूरे भारतीय फ़िल्म जगत और साथ साथ ग़ैर फ़िल्मी संगीत में भी अपनी एक विशिष्ट जगह बनाई। मधुर धुनों के साथ-साथ प्रभावशाली गीत लेखन और सुमधुर गायन तक सभी विधाओं में पारंगत ,'दादा' के नाम से मशहूर रवींद्र जैन एक चहुमुखी कलाकार रहे।दूरदर्शन पर रामानन्द सागर की रामायण जैसे अनेक धार्मिक धारावाहिकों का संगीतमय अलंकरण करके इन्होंने अलग पहचान क़ायम की। राजश्री पिक्चर्स की हल्की-फुल्की पारिवारिक फ़िल्मों से लेकर राज कपूर जैसे बड़े शो मैन की फ़िल्मों में सफलतापूर्वक संगीत निर्देशन इनकी प्रतिभा का प्रत्यक्ष दर्शन है।

मुख्य शब्द : कम्पोज़, संगीत निर्देशक, ऑर्केस्ट्रा, कलाकार, प्रतिभा

उद्देश्य

रवींद्र जैन जैसी महान हस्ती का प्रारम्भिक जीवन ,उनका अलीगढ़ से लेकर कलकत्ता तक का संघर्ष ,उसके बाद माया नगरी में प्रवेश और फिर अपने अनूठे कला कौशल से सबका दिल जीतने का हुनर सम्पादित रूप में पाठकों के समक्ष आना चाहिए।

शोध प्रविधि /पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में वर्णनात्मक शोध प्रविधि तथा विषय संबंधित साहित्य का अध्ययन तथा समीक्षा का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

चांद-सूरज के जो हों ख़ुद मोहताज
भीख मांगो न उन उजालों की
बंद आंखों से ऐसे काम करो
आंख खुल जाएं आंख वालों की

रवीन्द्र जैन एक ऐसा सूर्य थे जिसने चारों दशकों से भी अधिक समय से भारतीय संगीत जगत को रोशन कर रखा था।

रवीन्द्र जैन का जन्म 28 फ़रवरी 1944 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में हुआ। उनके पिता पंडित इंद्रमणि जैन प्रसिद्ध वैद्य शास्त्री थे और उनकी माता थी श्रीमती किरण जैन।जन्म से ही उनकी आंखें काफ़ी कमज़ोर थी तथा दृष्टि ना के बराबर थी। उनके पिताजी ने निर्णय लिया कि उन्हें ऐसी कला में डाला जाए, जिसमें नेत्रों का योगदान कम से कम हो। पिता उनके लिए एक हारमोनियम ले आए, क्योंकि नेत्रों का काम संगीत में शायद सबसे कम लगा उन्हें। रवींद्र जैन के घर का वातावरण पढ़ने-लिखने वाला था। बचपन से ही अपने बड़े भाई प्राध्यापक डी.के.जैन के संसर्ग का असर रहा। वे बचपन से ही साहित्यकारों की कृतियाँ अपने भाई के मुख से सुनते रहे। शायद इसी कारण वे आगे चलकर बहुत सफल गीतकार भी रहे। साहित्य प्रेम के कारण ही गीत-संगीत दोनों ही में अलंकरण से अधिक भावनात्मकता की ओर उनका झुकाव रहा।

उन्हीं के शब्दों में "मंदिरों में जाने का सिलसिला बचपन से ही जारी रहा। मंदिर में नित्य शास्त्र के पश्चात एक भजन मेरा नियमित रूप से हुआ करता, जिसके फलस्वरुप एक रुपया रोज़ पिताश्री से मिला करता था मुझे। उन भजनों में जैन कविवर दौलतराम, भागचंद भूधर दास, बनारसी दास बुधजन और इनमें से यदि कोई न मिले, तो मैं स्वयं कुछ पंक्तियां जोड़कर प्रस्तुत कर देता । इस तरह एक नए भजन और एक रुपये का ये सिलसिला जुड़ा रहा।" 1

बचपन में पंडित घमण्डीलाल, पंडित जनार्दन शर्मा और पतित नाथूराम शर्मा से संगीत की कुछ बारीकियाँ सीखने वाले रवीन्द्र जैन ने प्रयाग संगीत समिति से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली थी। वे एक कुशल गायक भी रहे हैं। उनकी सोहबत मुस्लिम दोस्तों में अधिक रही जिससे उन्हें ग़ज़लों और शायरी का शौक़ लगा। उनकी एक मित्र उन्हें ग़ज़लें लाकर देती और वे उन्हें स्वरबद्ध करके सुनाते।

अलीगढ़ में उन्होंने अपना छोटा-सा संगीत विद्यालय भी चलाया। हारमोनियम-वादक के रूप में उनकी चर्चा इन दिनों काफ़ी रही थी। फिर अपने चचेरे भाई के पास कलकत्ता में अपनी किस्मत आज़माने आए। वहीं परिचितों के माध्यम से फ़िल्म निर्माता राधेश्याम झुनझुनवाला के सम्पर्क में आए। संगीत सिखाना और संगीत रसिकों से मुलाक़ात का दौर भी चलता रहा। कलकत्ते में रवींद्र जैन हेमलता के पिता पं. जयचंद मट्ट के सम्पर्क में आए और वह रोचक है कि वही हेमलता बाद में उनकी प्रमुख गायिका बनीं। रवींद्र जैन ने बंगाल में अपना काफ़ी वक्त गुज़ारा तथा यही कारण है कि बंगाल के लोकसंगीत और रवींद्र संगीत की छाया भी उनकी कई रचनाओं में हमें मिलती है। कलकत्ता में ही मंचीय गायन के साथ-साथ बाँग्ला में उनका पहला गीत भी रेकॉर्ड हुआ।

संगीतकार वेदपाल वर्मा के सहायक के रूप में भी उन्होंने कुछ दिनों काम किया। फिर 1969 में राधेश्याम झुनझुनवाला रवींद्र जैन को बम्बई ले आए, फ़िल्म 'लोरी' में संगीत देने के लिए। फ़िल्म तो बनी नहीं, पर कुछ गीत रेकॉर्ड अवश्य किए गए जिसमें मुकेश के स्वर में दो अति सुंदर और दुर्लभ गीत थे- 'दुख तेरा हो कि दुख मेरा हो' और 'पल-भर जो बहला दे'। इससे पहले एन.एन. सिप्पी ने उन्हें एक समारोह में सुनकर उन्हें अपनी फ़िल्म 'सिलसिला है प्यार का' का संगीत सौंप दिया ।जैन ने रफ़ी के स्वर में 'माना कि तेरे होंठ मेरे जाम नहीं है' रेकॉर्ड भी कर लिया, पर यह फ़िल्म भी बनी नहीं।

फ़िल्म जगत में उनके पदार्पण की पहली ही प्रदर्शित फ़िल्म 'काँच और हीरा' (1972) से ही वे हिट हो गए। फ़िल्म में संगीत देने के साथ-साथ गीत लिखने की शुरुआत भी यहीं से हो गई। दर्द भरे सुरों को लेकर कम्पोज़ किए गए 'नज़र आती नहीं मंज़िल'(रफ़ी साहब,चन्द्राणी मुखर्जी) को श्रोताओं ने खूब सराहा। नए कलाकारों को मौका उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म से ही दिया। आरती मुखर्जी ,चन्द्राणी मुखर्जी ,जसपाल सिंह ,सुरेश वाडेकर ,हेमलता जैसे गायकों का फ़िल्मी सफ़र बिना रवींद्र जैन के आगे नहीं बढ़ सकता था। हेमलता जो उनके गुरु की पुत्री थीं ,उनके लिए लता जी का पर्याय बन गयी थीं। उन्होंने हेमलता से एक से बढ़कर एक गीत गवाए। रवींद्र जैन के निर्देशन में लता जी और आशा जी के बाद हेमलता ही इस दशक की सबसे लोकप्रिय गायिका साबित हुई।

राजश्री के साथ उनके साथ की पहली फ़िल्म नूतन, अमिताभ और पद्मा खन्ना अभिनीत 'सौदागर' (1973) के गीत बहुत हिट रहे। आशा भोंसले के मादक स्वर में श्रृंगार की क्रिया को उभारता 'सजना है मुझे सजना के लिए' तो एक अनुपम कृति थी। कुछ-कुछ एस.डी. बर्मन की शैली में तेरा मेरा साथ रहे' (लता) और 'हर हसीं चीज़ का मैं तलबगार हूँ' (किशोर) अपने ज़माने में खूब चले थे। फ़िल्म के ग्रामीण बंगाल के कथानक अनुरूप बनाया माँझी गीत 'दूर है किनारा' (मन्ना डे) तो अपनी गायकी और बाँसुरी तथा सरोद के कुशल प्रयोग के कारण अद्भुत रचना ही बन गई थी।राजश्री पिक्चर्स के साथ उनका असोसिएशन खूब आगे तक चला और काफी लोकप्रिय भी रहा। इनमें 'सुनयना' ,'दुल्हन वही जो पिया मन भाए' ,'नदिया के पार' और 'विवाह' जैसी फ़िल्में शामिल हैं।

रवींद्र जैन की प्रतिभा के चर्चे फ़िल्म जगत में इन आरम्भिक फ़िल्मों से ही होने लगे थे, और राज कपूर तथा राजेंद्र कुमार अभिनीत 'दो जासूस' (1975), राजश्री की 'गीत गाता चल' (1975), एन.एन. सिप्पी की ही 'चोर मचाए शोर' (1974) और 'तपस्या' (1975) के गीतों ने तो उन्हें हिट से बढ़ाकर सुपरहिट की श्रेणी में ला खड़ा किया। फ़िल्मी जगत में हिट और सुपरहिट के बीच का फ़ासला बहुत बड़ा होता है, और कई संगीतकार तो इसे पूरी जिंदगी तय नहीं कर पाते। पर रवींद्र जैन ने इसे कुछ ही वर्षों में पाट लिया। 'चोर मचाए शोर' (1974) के 'ले जाएँगे ले जाएँगे दिलवाले दुलहनिया ले जाऐंगे' (किशोर) तो इतना चला कि आज तक शादी में ऑरकेस्ट्रा वाले उसकी धुन जम कर बजाया करते हैं। 'एक डाल पर तोता बोले' (रफ़ी, लता) भी खूब मक़बूल रहा। पर फ़िल्म का सबसे सुंदर गीत था राग झिंझोटी पर आधारित मर्म और अनुभूति दोनों ही स्तरों पर झकझोरता 'घुँघरू की तरह बजता ही रहा हूँ मैं' (किशोर)।

ऐसी ही उनकी एक बेहद चर्चित फ़िल्म थी राजश्री की ही बासु चटर्जी निर्देशित ' चितचोर ' (1976)। प्रसिद्ध मलयालम गायक येसुदास के लिए हिंदी फ़िल्मों में जगह इसी फ़िल्म की सफलता से बनी थी और उनके गाए राग धानी पर आधारित 'गोरी तेरा गाँव बड़ा प्यारा' (जिसमें शिवकुमार शर्मा का संतूर और हरिप्रसाद चौरसिया की बाँसुरी भी शामिल थी) और 'आज से पहले आज से ज़्यादा' खूब लोकप्रिय रहे। पर 'चितचोर' के जो दो गीत खूब लोकप्रिय रहने के साथ-साथ रचनात्मक श्रेष्ठता के कारण भी आज तक चर्चित होते हैं, वे थे यमन कल्याण पर आधारित तीन ताल में सृजित (जिसे मूलतः कलकत्ता में 'मृच्छकटिकम' नाटक के लिए रवींद्र जैन ने बनाया था) 'जब दीप जले आना, अब शाम ढले आना (येसुदास, हेमलता),

तथा पीलू और मालगूंजी के सुरों के साथ संवारा गया 'तू जो मेरे सुर में सुर मिला ले' '(येसुदास, हेमलता)। इन दोनों गीतों की बंदिश में न केवल माधुर्य और कोमलता है, बल्कि एक ऐसी पावनता है कि कोई आश्चर्य नहीं होता कि इस रचनात्मक उपलब्धि के लिए रवींद्र जैन को वर्ष का सुर सिंगार संसद पुरस्कार मिला।

उनके द्वारा संगीतबद्ध 'फ़कीरा' (1976) के गीत भी सर चढ़कर बोले थे। रवींद्र जैन की विशिष्ट 'पुकार' को लेकर इस बार भैरवी में 'फकीरा चल चला चल' (महेंद्र कपूर, हेमलता) तोता मैना की कहानी तो पुरानी, पुरानी हो गई' (लता, किशोर) काफी लोकप्रिय रहे। गुणात्मक रूप से फ़िल्म का सर्वश्रेष्ठ गीत या लता जी के स्वर में पावन, कोमल सुरों के साथ राग धानी पर सृजित 'दिल में तुझे बिठा के कर लूँगी में बंद आँखें, पूजा करूँगी तेरी'। इस गीत का सौंदर्य तो हर अंतरे के साथ बढ़ता चलता है।

इन सभी गीतों में कहीं रवींद्र जैन की पहचानी पुकार, संस्कारवादी अभिव्यक्ति तो कहीं लोकसंगीत की स्पष्ट छाप का ही प्रभुत्व था।

'अँखियों के झरोखों से' (1978) से तो उन्होंने लोकप्रियता के नए आयाम स्थापित किए। इस फ़िल्म के शीर्षक गीत की तो जितनी भी तारीफ की जाए, कम है। एक अजीब-सी सम्मोहक नर्मी से भरपूर इस प्यार भरे गीत की धुन, ऑरकेस्ट्रेशन और गायकी सभी के लिए एक ही शब्द प्रयुक्त हो सकता है-'बेमिसाल'।यह हेमलता का सर्वश्रेष्ठ गीत कहा जा सकता है। पारम्परिक दोहों को लेकर सृजित बड़े बड़ाई न करें (हेमलता, जसपाल सिंह) की मेलोडी, 'कई दिन से मुझे कोई सपनों में' (शैलेन्द्र सिंह, हेमलता) की सुहानी अनुगूंज, 'एक दिन तुम बहुत बड़े बनोगे एक दिन (हेमलता, शैलेंद्र सिंह) की झूमती-झुमाती लय-इन सभी से 'राजश्री' की इस ग्रामीण परिवेश से अलग कथानक की फ़िल्म में रवींद्र जैन ने भी अपने संगीत के द्वारा प्रेम की भावना को ग्रामीण संदर्भ की अपनी पुकारती, आह्वान करती शैली से अलग एक बेहद आकर्षक आधुनिक रंग दिया।

80 के दशक में भी दादा का उत्कृष्ट सृजन जारी रहा।

यह भी रवींद्र जैन की संगीत पर पकड़ का ही परिणाम था कि महान फ़िल्म अभिनेता,निर्माता-निर्देशक फ़िल्म जगत के 'शो मैन' कहे जाने वाले राज कपूर ने अपनी फ़िल्म 'राम तेरी गंगा मैली' (1985) के लिए बतौर संगीतकार रवींद्र जैन को चुना। यह एक बहुत बड़ा सम्मान था क्योंकि राज कपूर स्वयं संगीत के बड़े जानकार और पारखी थे, और संगीत उनकी फ़िल्मों में एक प्रमुख तत्त्व के रूप में आता रहा था।

इस फ़िल्म से जुड़ा रोचक किस्सा है-

राज कपूर दिल्ली में एक शादी समारोह में शामिल होने आए थे। वहां रवींद्र जैन खुद का लिखा और संगीतबद्ध किया एक भजन प्रस्तुत कर रहे थे - एक राधा एक मीरा । यह भजन सुनते ही राज कपूर बहुत प्रभावित हुए और उसे तीन दिन तक रोज़ सुना, उसके बाद उन्होंने दादा से पूछा कि क्या यह गीत वो किसी को दे चुके हैं ? तब उन्होंने बताया कि यह अभी उनकी निजी रचना है, यह सुनकर राज कपूर शगुन का सवा रुपया देकर बोले "यह रचना अब मेरी हुई।" तब कोई भी यह नहीं समझ पा रहा था, कि इस एक रचना का आखिर राज कपूर क्या करेंगे। फिर कुछ दिनों के बाद पुणे में राज कपूर ने अपने फार्म हाउस पर रविंद्र जैन को आमंत्रित किया। राज साहब बोले "मैं इसी गीत (एक राधा) को आधार बनाकर एक फ़िल्म बनाऊंगा और उस फ़िल्म का संगीत आप देंगे।" यह सुन दादा रविंद्र जैन अत्यंत अभिभूत हो गए।कुछ ही समय में राज साहब ने इसी गीत के इर्द-गिर्द एक कहानी लिखी और इस प्रकार उस फ़िल्म का निर्माण शुरू हुआ जिसका नाम था 'राम तेरी गंगा मैली' । धीरे धीरे फ़िल्म के और गीत भी तैयार हो गए। फ़िल्म सुपरहिट हुई और इसका संगीत भी बहुत लोकप्रिय हुआ। हुस्न पहाड़ों का ,सुनो तो गंगा ,सुन साहिबा सुन ,राम तेरी गंगा मैली हो गयी आदि सभी गीत खूब मशहूर हुए। इस फ़िल्म के लिए रवीन्द्र जैन को सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार

मिला। तो इस प्रकार केवल एक रचना के आधार पर पूरी फ़िल्म की परिकल्पना कर दी गई । यह काम शायद केवल राज कपूर ही कर सकते थे। यह किस्सा स्वयं रवींद्र जैन साहब ने एक साक्षात्कार में बताया है।

इसके कुछ सालों बाद राज कपूर के ड्रीम फ़िल्म प्रोजेक्ट 'हिना' (जिसे उनके निधन के बाद उनके पुत्र रणधीर कपूर ने पूरा किया) में भी रवींद्र जैन ने उत्कृष्ट संगीत दिया।

चाहे राजश्री पिक्चर्स की फिल्में हों या अन्य , रवीन्द्र जैन के गीत-संगीत में हमेशा कहीं न कहीं एक भक्ति रस के प्रति विशेष रुझान नज़र आता है। शायद यही कारण रहा कि 1987 में दूरदर्शन पर निर्माता निर्देशक रामानन्द सागर के बहुचर्चित धारावाहिक रामायण का सम्पूर्ण संगीत देने के लिए इन्हें ही चुना गया। यह कहना होगा कि इस विराट पौराणिक टीवी सीरियल के संगीत के साथ जितना न्याय रवींद्र जैन ने किया ,शायद ही कोई और कर पाता। इनके मार्मिक भजन घर घर में सराहे गए। 'राम भक्त ले चला रे राम की निशानी' ,'राम कहानी' ,'रामजी की सेना चली' आदि भजनों ने खूब धूम मचाई। इसी तरह 'श्री कृष्ण' ,'जय हनुमान' आदि धारावाहिकों में भी इनका संगीत प्रभावशाली रहा।

2015 में उन्हें अपने सांगीतिक योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहित्य और संगीत की सेवा करते हुए आपने अनेक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किए हैं, जिनमें उर्दू शायरी की पुस्तक 'उजालों का सिलसिला' के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'रसेश्वर, सुर श्रृंगार', यूथ नेशनल अवार्ड, दादा साहेब फाल्के अवार्ड, लता मंगेशकर अवार्ड, अमीर खुसरो अवार्ड, स्वामी हरिदास, प्रियदर्शिनी, संगीत ज्ञानेश्वर, संगीत सम्राट् आदि।

आपकी जीवनी पर आधारित पुस्तक 'सुनहरे पल' तथा आपकी ग़ज़लों का संग्रह 'दिल की नजर से' प्रकाशित। आपने कुरान शरीफ का अरबी भाषा से सहल उर्दू ज़ुबान में तर्जुमा किया है। साथ ही श्रीमद्भगवत गीता का सरल हिंदी पद्यानुवाद भी कर चुके थे। आपने लगभग 110 फिल्मों में संगीत दिया।

9 अक्टूबर 2015 को वे पंचतत्व में विलीन हो गए।

70 और 80 के दशक में फ़िल्म संगीत हो या उनका रचा ग़ैर फ़िल्म संगीत, रवींद्र जैन ने हमेशा गुणवत्ता के साथ जनप्रिय और व्यावसायिक रूप से सफल संगीत दिया तथा संगीत के साथ-साथ साहित्य की अच्छी समझ भी उनके कृतित्व में चार चांद लगाती रही।

निष्कर्ष

विराट सांगीतिक रचनात्मकता, उतना ही सटीक गीत लेखन और गायन प्रतिभा का संगम एक ही शख्सियत में होना वाकई सम्पूर्ण विश्व की एक दुर्लभ तस्वीर है जो हमें रवींद्र जैन की कला में देखने को मिली। आने वाले कई दशकों तक इनकी धुनों का असर भारत के आमजन से लेकर संगीतज्ञों और समाज के हर वर्ग को आनंदित करता रहेगा।

सन्दर्भ

1. सुनहरे पल , सम्पादक दिव्या जैन वाणी प्रकाशन , 1998, ,P 13 .
2. धुनों की यात्रा, पंकज राग, राज कमल प्रकाशन, 2006
3. https://www.nytimes.com/2015/10/11/arts/music/ravindra-jain-bollywood-film-composer-dies-at-71.html
4. https://www.business-standard.com/article/current-affairs/bollywood-s-veteran-music-composer-ravindra-jain-dies-at-71-115100901161_1.html

5. https://www.ndtv.com/india-news/legendary-musician-ravindra-jain-dies-in-mumbai-hospital-1230310
6. https://www.outlookindia.com/art-entertainment/ravindra-jain-musician-news-295572
7. https://myswar.co/artist/ravindra-jain
8. https://enabled.in/wp/ravindra-jain-the-renowned-blind-music-director/
9. https://www.prabhatbooks.com/author/ravindra-jain.htm
10. WebCite query result (webcitation.org)